Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

कत्यूरी कला में गंगा और यमुना का अंकन

शालिनी पाठक

अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, एस एस जे परिसर अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड।

गंगा और यमुना भारतीय संस्कृति का प्रतीक है जिनकी गणना भारत की सर्वाधिक पवित्र नदियों के रूप में की जाती है। गंगा यमुना के दोआब में समृद्धशाली आर्य संस्कृति का गौरवशाली रूप विकसित हुआ एवं इसी क्षेत्र में 6 शताब्दी ई0पू0 में नगरीकरण का प्रारम्भ हुआ। भारत के किसी भी स्थान पर अपनी परम्परा में आस्था रखने वाला व्यक्ति जब स्नान करने जाता है तो उसके मुख से अनायास ही फूट पड़ता है–

गंगे च यमुने चैव गोदावरी च सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिंकुरू।।

स्कंद पुराण[1] में गंगा के एक सहस्र नामों का उल्लेख हुआ है। ब्रह्म पुराण[2] में यमुना के आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन करते हुए इसे सृष्टि का आधार कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण[3] तथा ऐतरेय ब्राह्मण[4] में यमुना एवं गंगा के किनारे भरत की विजयों एवं यज्ञों का उल्लेख है। तैत्तिरीय आरण्यक में कहा गया है कि गंगा एवं यमुना के बीच में रहने वाले विषेश रूप से सम्मानित होते हैं।[5] भारतीय परम्परा में गंगा एवं यमुना का अत्यधिक महत्व है तथा इन्हें मोक्षदायिनी कहा गया है। पुराणों में गंगा के विवाहित होने के कारण उन्हें सुन्दर महिला के रूप में दिखाने की परम्परा रही है।[6] मत्स्यपुराण[7] में कहा गया है–

गंगा च यमुना चैव उभे तुल्यफते स्मृते।
केवल ज्येष्ठ भावेन गंड़ग सर्वत्र पूज्यते।।

अर्थात् गंगा और यमुना दोनों समान फल देने वाली है। केवल ज्येष्ठ होने के कारण गंगा सर्वत्र पूजी जाती है।

कला में गंगा और यमुना :– ऋग्वेद[8] में सर्वप्रथम नदी देवता के रूप में संकल्पना की गई है जहाँ सात नदियों को नदी देवता के रूप में संबोधित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[9] में देवालय के प्रवेश द्वार पर नदी देवताओं की प्रतिमा निर्मित करने के निर्देश प्राप्त होते हैं। ग्रुनवेडेल ने नागिनी और मत्स्य कन्याओं की आकृतियों को नदियों के मानव रूप की कल्पना का आधार माना है जो जल देवताओं का प्रतिनिधित्व करती है।[10] विष्णुधर्मोत्तर पुराण[11] में इंगित है कि नदी देवताओं का गर्भगृह के प्रवेश द्वार में अंकन देवताओं को मंदिर में निवास के लिए आकृष्ट करता है क्योंकि नदियाँ देवताओं के प्रिय आवासों में एक है। कुमारसंभव[12] में उल्लेखित है कि नदियों के दर्शन, स्नान एवं आचमन मात्र से मनुष्य के पापों का नाश होता है। वस्तुतः मंदिर में नदी देवताओं का अंकन देवालय व उपासक दोनों की पवित्रता का आभास प्रदान करता है। जे0 एन0 बनर्जी[13] ने भरहुत के अवशेषों के आधार पर यहाँ से प्राप्त अप्सराओं की प्रतिमाओं को गंगा–यमुना की मूर्त रूप का प्रेरणा स्रोत माना है। कुमारस्वामी[14] गंगा–यमुना की प्रतिमा का विकास शालभंजिका की प्रतिमा से मानते हैं जिन्हें त्रिभंग मुद्रा में कभी कबार मकर पर आरूढ़ प्रदर्शित किया गया है।

प्रतिमा रूप में गंगा एवं यमुना का अंकन गुप्त काल में प्रारम्भ हुआ। कालीदास ने गंगा तथा यमुना के मानवीय रूप का उल्लेख शिव पार्वती विवाह के संदर्भ में किया है।[15] गुप्तकालीन भूमरा के शैव मंदिर में प्रवेश द्वार पर मकर वाहिनी गंगा एवं कुर्मवाहिनी यमुना का अंकन हुआ है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[16] में गंगा एवं यमुना के वाहन के रूप में मकर एवं कूर्म का उल्लेख किया गया है। अग्निपुराण[17] में भी गंगा एवं यमुना का यही रूप उल्लेखित है।

अध्ययन क्षेत्र में गंगा एवं यमुना की प्रतिमाएं :– कुमाऊँ के विविध देवालयों से गंगा एवं यमुना का अंकन दो रूपों में प्राप्त होता है–

(1) स्वतंत्र प्रतिमाएं

(2) प्रवेश द्वार की पेद्या एवं देवालय की शुकनाशिका में अंकन

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के परिणाम स्वरूप गंगा एवं यमुना की अनेक प्रतिमाएं प्रकाश में आई हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

गंगा–यमुना, कपिलेश्वर, अल्मोड़ा :– गंगा और यमुना की यह प्रतिमा कपिलेश्वर मंदिर समूह की द्वार शाखाओं में अंकित है। सौम्य मुखाकृति युक्त दोनों ही देवियाँ ऊपर उठे हाथों में मंगल कलश धारण किए हैं जब कि दूसरा हाथ पार्श्व में अंकित स्त्री अनुचर आकृति के शीर्ष पर अवस्थित है। देवियों के दाएं व बाएं पार्श्व में क्रमशः एक–एक स्त्री अनुचर आकृतियाँ अंकित है। त्रिभंग मुद्रा में अंकित देवियाँ अलंकृत केश, हार, केयूर, कंकण, मेखला एवं साड़ी से सुशोभित है। धोतीयों के अलंकरण हेतु प्रयुक्त रेखाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं। क्रमशः अपने वाहन मकर व कूर्म पर त्रिभंग मुद्रा में प्रदर्शित उक्त प्रतिमाएं कला एवं स्थापत्य की दृष्टि से यह प्रतिमाएं 8 वीं शताब्दी की प्रतीत होती हैं।

गंगा यमुना का एक अन्य अंकन कपिलेश्वर मंदिर के खण्डित शुकनाश से भी प्राप्त होता है। देवालय की शुकनाशिका में उत्कीर्ण विशाल चैत्य गवाक्ष के मध्य में निर्मित नटराज के बाम एवं दक्षिण पार्श्व में वाहन मकर एवं कूर्म पर आरूढ़ द्विभुजी गंगा व यमुना अंकित है जो कि मंगल कलश धारण किए हुए हैं। उक्त चैत्य गवाक्ष में गणेश, मुरलीवादक, घटवादक, मालाधारी विद्याधर आदि आकृतियाँ अंकित हैं। कला एवं स्थापत्य की दृष्टि से यह प्रतिमा 8 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

गंगा–यमुना, बमनसुयाल, अल्मोड़ा :– गंगा और यमुना की यह प्रतिमा बमनसुयाल मंदिर परिसर में खण्डित अवस्था में रखे दो स्तम्भों के निचले भाग में अंकित हैं। प्रतिमा में गंगा अपने वाहन मकर पर त्रिभंग मुद्रा में आरूढ़ है और अपने दोनों हाथों से मंगल कलश थामे हुए है। गंगा के दक्षिण पार्श्व में त्रिशूल धारण किए हुए अनुचर आकृति अंकित है। द्वितीय स्तम्भ में कूर्म पर त्रिभंग स्थानक मुद्रा में अंकित यमुना भी गंगा के समान अपने दोनों हाथों में मंगल कलश धारण किए हुए है। यमुना के बाम पार्श्व में दो अनुचर आकृतियाँ क्रमशः चॅवर एवं त्रिशूल धारण किए हुए है। गंगा एवं यमुना अलंकृत केश, मकर कुण्डल, हार, केयूर, कंकण, कमरबंध एवं धोती से सज्जित है एवं दोनों ही प्रतिमाओं के शीर्ष में छत्र विद्यमान है। कला एवं शिल्प की दृष्टि से ये प्रतिमाएं 9 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

गंगा–यमुना, नटराज मंदिर जागेश्वर, अल्मोड़ा :– गंगा की यह प्रतिमा जागेश्वर मंदिर समूह में स्थित नटराज मंदिर के प्रवेश द्वार की दक्षिण पेद्या में अत्यंत कलात्मकता के साथ उत्कीर्ण है। प्रतिमा में द्विभुजी गंगा वाहन मकर के पृष्ठ (पीठ) भाग पर पद्मपीठ में स्थानक द्विभंग मुद्रा में प्रदर्शित है। अलंकृत केशराशि, कर्णकुण्डल, हार, एकावली, पाजेब व अधोवस्त्र से सुसज्जित द्विभुजी गंगा ऊपर उठे हुए बाम हस्त में कलश एवं नीचे लटके दक्षिण हस्त में कमण्डल धारण किए हुए हैं। गंगा के बाम एवं दक्षिण पार्श्व में गंगा के समान केशराशि एवं आभूषणों से अलंकृत त्रिभंग मुद्रा में क्रमशः एक–एक परिचारीकाएं अंकित हैं। वाम पार्श्व की स्त्री परिचारीका का वाम हस्त जंघा पर एवं दक्षिण हस्त चॅवर धारण किए है जबकि दक्षिण पार्श्व की परिचारिका का दक्षिण हस्त नीचे लटका हुआ व ऊपर उठे हुए वाम हस्त में संभवतः चॅवर प्रदर्शित है। गंगा के शीर्ष भाग पर अलंकृत छत्र शोभायमान है। कला की दृष्टि से उक्त प्रतिमा लगभग 9 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

उक्त मंरिद के प्रवेश द्वार की वाम पार्श्व की पेद्या में यमुना की प्रतिमा कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण की गयी है। यमुना त्रिभंग मुद्रा में कूर्म पर आरूढ़ है एवं ऊपर उठे हुए दक्षिण हस्त में मंगल कलश धारण किए हुए तथा वाम हस्त नीचे लटका हुआ प्रदर्शित है। यमुना के दोनों पार्श्वों में त्रिभंग मुद्रा में स्त्री अनुचर आकृतियाँ अंकित है। दक्षिण पार्श्व की स्त्री आकृति छत्र पकड़े हुए है जो कि यमुना के शीर्ष को आच्छादित किए हुए है। अलंकृत केशविन्यास,

मकर कुण्डल, हार, एकावली एवं धोती से अलंकृत यमुना की यह प्रतिमा कला एवं स्थापत्य के आधार पर 9 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

गंगा–यमुना, कटारमल मंदिर समूह, अल्मोड़ाः– उक्त मंदिर समूह में अवस्थित संयुक्त देवालय के प्रवेश की द्वार शाखाओं के निचले हिस्से में गंगा का अंकन प्राप्त होता है। प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्व में द्विभुजी मकरासीन गंगा शोभायमान है। आसन रूप में गंगा का यह अंकन दुर्लभ है एवं कला की दृष्टि से 9 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

यमुना, बनकोट, पिथौरागढ़ :– यमुना की यह प्रतीमा विष्णु मंदिर भट्टीगाँव बनकोट में अवस्थित है। आंशिक रूप से खण्डित इस प्रतिमा में त्रिभंग मुद्रा में वाहन कूर्म पर अवस्थित द्विभुजी यमुना ऊपर उठे दायें हाथ में मंगल कलश धारण किए हुए है एवं उनका वाम हस्त वाम जंघा पर अवस्थित है। देवी के दक्षिण पार्श्व में चॅवर धारिणी स्त्री अनुचर प्रदर्शित है। अलंकृत केश, वृत्त एवं मकर कुण्डल, हार, स्तनहार, कमरबंद (जिसकी लटकन जंघा भाग तक दृष्टिगोचर हो रही है), अलंकृत साड़ी, केयूर, कंकण, नुपूर से सुशोभित देवी के वाम पार्श्व में त्रिभंग स्त्री अनुचर आकृति छत्र पकड़े हुए अंकित है। कला एवं शिल्प की दृष्टि से यह प्रतिमा 9 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

गंगा, बनकोट, अल्मोड़ा :– त्रिभंग मुद्रा में गंगा की यह प्रतिमा भी विष्णु मंदिर परिसर भट्टीगाँव बनकोट में अवस्थित है। प्रतिमा में मकरारूढ़ द्विभुजी गंगा का मुख भाग खण्डित है एवं ऊपर उठे खण्डित वाम हस्त में वह संभवतः मंगल कलश धारण किए हुए है जब कि वाम हस्त से वह जंघा के समीप कमरबंध की लटकन थामे हुए हैं। गंगा के दक्षिण व वाम पार्श्व में एक–एक चॅवर धारणी स्त्री अनुचर आकृति उत्कीर्ण है जो कि गंगा के समान त्रिभंग मुद्रा में प्रदर्शित है। गंगा के दक्षिण पार्श्व में स्त्री अनुचर आकृति के पश्च भाग में छत्र निर्मित है जो कि गंगा के शीर्ष भाग को आवृत किए हुए है। वृत्त कुण्डल, हार, स्तनहार, कंकण, केयूर, कमरबंध, पाजेब व अलंकृत धोती से सुसज्जित देवी की यह प्रतिमा कला एवं शिल्प की दृष्टि से लगभग 9 वीं शताब्दी की दृष्टिगोचर होती है।

गंगा, जागेश्वर संग्रहालय, अल्मोड़ा :– गंगा की यह स्वतंत्र प्रतिमा जागेश्वर संग्रहालय में संग्रहित है। प्रतिमा में द्विभुजी गंगा त्रिभंग मुद्रा में वाहन मकर पर आसीन है। गंगा उर्ध्व दक्षिण हस्त में जल घट धारण किए हुए है जब कि उनका वाम हस्त जंघा पर अवस्थित है। सर्वाभूषित गंगा के दोनों हाथों में उत्तरीय स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। गंगा के दोनों पार्श्वों में स्त्री अनुचर अंकित हैं। दायीं ओर की स्त्री अनुचर चॅवर धारण किए हुए है जब की बायीं ओर की स्त्री अनुचर आकृति छत्र धारण किए हुए है। कला एवं अलंकरण के आधार पर यह प्रतिमा 10–11 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

गंगा, बयाला, अल्मोड़ा :– गंगा की यह प्रतिमा सोमेश्वर के समीपवर्ती बयाला गाँव में अवस्थित ब्रदीनाथ मंदिर के गर्भगृह में स्थापित है। प्रतिमा में द्विभुजी गंगा वाहन मकर पर द्विभंग मुद्रा में उत्कीर्ण है। देवी ऊपर उठे वाम हस्त में चॅवर धारण किए हुए है। गंगा के शीर्ष पर छत्र सुशोभित है। देवी के वाहन मकर में सजीवता लाने का प्रयास शिल्पी के द्वारा किया गया है। अलंकृत एवं लहराती केशराशि, वृत्त कुण्डल, हार, बाजूबंध, कंकण, कमरबंध, अलंकृत धोती से युक्त गंगा की मुखाकृति सौम्य दृष्टिगोचर होती है। कला एवं शिल्प की दृष्टि से यह प्रतिमा 9 वीं शती की प्रतीत होती है।[18]

गंगा, देवराड़ी पन्त गाँव, पिथौरागढ़ :– गंगा की यह प्रतिमा बनकोट के समीपवर्ती देवराड़ी पन्त गाँव के वैष्णवी मंदिर में विद्यमान है। गंगा की यह प्रतिमा आंशिक रूप से खण्डित है। प्रतिमा में द्विभुजी गंगा त्रिभंग मुद्रा में मकरारूढ़ प्रदर्शित है। द्विभुजी गंगा का ऊपर उठा वाम हस्त खण्डित है जिसमें वह सम्भवतः मंगल कलश धारण किए होगीं तथा आंशिक रूप से खणिडत वाम हस्त जंघा के समीप अवस्थित है। देवी के दक्षिणार्थ हाथ जोड़े स्त्री अनुचरी आकृति बैठे हुए अंकित है एवं इसके पश्च भाग में छत्र–दण्ड दृष्टिगोचर होता है। देवी के शीर्ष पर आच्छादित छत्र आंशिक रूप से खण्डित है। व्यवस्थित केशविन्यास, वृत्त कुण्डल एवं सभी सामान्य अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित गंगा की मुखाकृति में सौम्यता के भाव स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। कला एवं अलंकरण के आधार पर यह प्रतीमा में 8–9 वीं शताब्दी की दृष्टिगोचर होती है।

गंगा, सिटोली गाँव, बागेश्वर :– गंगा की यह प्रतिमा कत्यूर घाटी में अवस्थित सिटोली नामक ग्राम से प्रकाश में आयी तथा वर्तमान में राजकीय संग्रहालय, अल्मोड़ा में प्रदर्शित है। प्रतिमा में गंगा अपने वाहन मकर पर त्रिभंग मुद्रा

में खड़ी है। देवी शीर्ष में अलंकृत रत्न जड़ित मुकुट, गूँथी हुवी केशराशि, दायें कान में मकर कुण्डल तथा बायें में पत्र कुण्डल, हसुली, हार जो कि कमर के निचले हिस्से तक लटका हुवा है, मेखला, अलंकृत धोती से सुशोभित है। द्विभुजी गंगा का दायाँ हाथ खण्डित है, सम्भवतः इस में कलश रहा होगा। देवी का बायाँ हाथ शिवलिंग धारण किए हुए वाम पार्श्व में खड़ी परिचारिका के शीर्ष पर अवस्थित है। उपासिका भी कंधे तक उठे दाएं हाथ में शिवलिंग धारण किए हुए है। इस उपासिका के पीछे एक अन्य उपासिका अपने हाथों में छत्र धारण किए हुए हैं, जो कि देवी के शीर्ष को आवृत किए हुए है। देवी के वाम पार्श्व में अंकित उपासिका त्रिभंग मुद्रा में शीर्ष में अवस्थित घट को अपने दोनों हाथों में थामे हुए है। पृष्ठ भाग में दूसरी खड़ी उपासिका दायें हाथ में खड्ग तथा बायें ऊपर उठे हाथ में अस्पष्ट वस्तु धारण किए हुए है। प्रतिमा के शीर्ष भाग में देवी के दोनों पार्श्वों में एक–एक आंशिक रूप से खण्डित उपासक नमस्कार मुद्रा में बैठे हुए अंकित है। प्रतिमा के शीर्ष में पद्म प्रभामण्डल उत्कीर्ण है। देवी की यह प्रतिमा अलंकरण अनुचर आकृतियों के भराव के फलस्वरूप लगभग 10–11 वीं शती में निर्मित प्रतीत होती है।

द्विभुजी गंगा की एक अन्य प्रतिमा बागनाथ मंदिर परिसर में अवस्थित भैरव मंदिर के प्रवेश द्वार के दाहिने पार्श्व में स्थापित है। प्रतिमा में गंगा जटामुकुट, कानों में मकर कुण्डल, हार, एकावली, केयूर, नूपुर व धोती से अलंकृत है। देवी की गूँथी हुवी केशराशि दायीं और प्रदर्शित है तथा अपने वाहन मकर के ऊपर त्रिभंग मुद्रा में अंकित है। द्विभुजी देवी अपने दोनों हाथों से घट (कलश) थामे हुये है, जो कि उनके बायें पार्श्व में कमर के पास अवस्थित है। देवी का वाहन मकर अधिकांशतः खण्डित है। देवी के दाएं पार्श्व में त्रिभंग मुद्रा में खड़ी उपासिका आंशिक रूप से खण्डित है। उपासिका अपने ऊपर उठे हुए वाम हस्त में अस्पश्ट वस्तु धारण किए हुए, जिसका दूसरा दण्ड सदृश छोर उसके कमर के पास अवस्थित दाएं हस्त में है। संभवतः उपासिका सिटोली प्रतिमा के समान छत्र पकड़े हुए है। प्रतिमा के खण्डित होने के कारण आयुध स्पष्ट नहीं है। प्रतिमा अलंकरण में सादगी के फलस्वरूप लगभग 9 वीं शताब्दी में निर्मित प्रतीत होती है।

निष्कर्ष

नदी देवताओं का मूर्त रूप में अंकन कुमाऊँ क्षेत्र में देवालय स्थापत्य एवं प्रतिमा शिल्प का लोकप्रिय विषय रहा है। कुमाऊँ क्षेत्र के विविध स्थानों से गंगा यमुना का स्वतंत्र एवं प्रवेश द्वार की पेद्या में अंकन प्राप्त होता है। कला की दृष्टि से गंगा यमुना का प्राचीन अंकन नारायणकाली देवालय के प्रवेश द्वार की पेद्या से प्राप्त होता है जो कि गुप्त कला से प्रभावित है। कुमाऊँ क्षेत्र में जागेश्वर मंदिर समूह (अल्मोड़ा), कटारमल मंदिर समूह (अल्मोड़ा), बद्रीनाथ मंदिर बयाला (अल्मोड़ा), बमन सुयाल (अल्मोड़ा), कपिलेश्वर (अल्मोड़ा), सिटोली (बागेश्वर), बागनाथ मंदिर (बागेश्वर), विष्णु मंदिर भट्टीगाँव (पिथौरागढ़), देवराड़ी पंत गाँव (पिथौरागढ़), गंगोलीहाट (पिथौरागढ़) से प्रकाश में आयी है। जब कि गढ़वाल क्षेत्र[19] में चंडी मंदिर (गोपेश्वर), सूर्य मंदिर (पलेठी), शिव मंदिर (लाखामण्डल), नृसिंह मंदिर (जोशीमठ) आदि स्थानों से प्राप्त होती है।

उपरोक्त अंकन से स्पष्ट है कि गंगा का अंकन प्राचीन काल से ही उत्तराखण्ड क्षेत्र में शिल्पियों का प्रिय विषय रहा है। सिटोली से प्राप्त एवं वर्तमान में राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा में संग्रहित गंगा की प्रतिमा अलंकरण की दृष्टि से विशिष्ट है। उक्त प्रतिमा में गंगा मंगल कलश के साथ शिवलिंग भी धारण किए हुए है। देवी के साथ अंकित एक स्त्री अनुचर खड्ग धारण किए हुए है जो कि उत्तराखण्ड में दुर्लभ है। कटारमल मंदिर समूह देवालय के प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्वों में आसनरूढ़ मकर पर देवी का अंकन दृष्टिगत होता है। आसन मुद्रा में एवं प्रवेश द्वार के दानों पार्श्वों में देवी गंगा का अंकन भारतीय कला में अन्यत्र प्राप्त नहीं होता है। वैष्णवी मंदिर देवराड़ी पंत गाँव से प्राप्त गंगा की प्रतिमा प्रारम्भिक कत्यूरी कला सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जहाँ कलाकार का प्रयास शारिरिक सौन्दर्य को उकेरेने की अपेक्षा आध्यात्मिक सौन्दर्य को प्रस्तुत करना रहा है। विष्णु मंदिर भट्टीगाँव (बनकोट) से प्राप्त यमुना की प्रतिमा दुर्लभ है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मध्य हिमालयी क्षेत्र में गंगा की तुलना में यमुना की यह प्रतिमा भारतीय कला का एक और उदाहरण है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारत के विभिन्न भागों के समान ही मध्य हिमालयी क्षेत्र में भी गंगा व यमुना का अंकन शास्त्रों में वर्णित दिशा निर्देशों के अनुसार किया गया एवं तत्कालीन शिल्पियों ने अपने शिल्प कौशल एवं सौन्दर्य बोध से कला की दृष्टि से उत्कृष्ट प्रतिनिधि प्रतिमाओं का निमार्ण किया।

संदर्भ

1. स्कन्द पुराण, काशीखण्ड, अध्याय 33–37।
2. ब्रह्म पुराण, hi.m.wilkipedia.org
3. शतपथ ब्राह्मण, 13/5/4/11 व 13।
4. ऐतरेय ब्राह्मण, 39, 9।
5. श्रीवास्तव, राकेश कुमार, साहित्य और कला में यमुना, सं0 पु0 पृष्ठ, 56।
6. श्रीवास्तव, आनन्द प्रकाश, एलोरा की ब्राह्मण प्रतिमाएँ, पृष्ठ 129।
7. मत्स्यपुराण, अध्याय 102।
8. ऋग्वेद, अध्याय 10, 75।
9. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अध्याय, 86, 69।
10. ग्रुनडेवेल, ए0, बुद्धिस्ट आर्ट इन इंडिया, बर्जेस लंदन, 1965, पृष्ठ 46।
11. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 111/96/30।
12. कुमारसंभव, 45।
13. बनर्जी, जितेन्द्र नाथ, डेवलपमेन्ट आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ 353–54।
14. कुमारस्वामी, आनंद के, यक्षाज, पृष्ठ 66–69।
15. कुमारसंभव, 111/42।
16. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 111/52/1–7।
17. अग्निपुराण, 50/15।
18. तिवाड़ी, देवकी नन्दन, कुमाऊँ की देव प्रतिमाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध कु0वि0वि0 नैनीतल, 1984।
19. कठोच, यशवंत सिंह, मध्य हिमालय की कला, देहरादून, 2003, पृष्ठ 194–95।